सूरदास के काव्य में कृष्ण–चरित्र

डॉ. ओमवीर सिंह
हिन्दी–विभाग
विवेकानन्द कॉलेज, दिल्ली–95

सारांशिका

महाकवि सूरदास ने अपने काव्य सूरसागर में कृष्ण चरित्र की महिमा का चित्रण विस्तृत स्वरुप में प्रदर्शित किया है। इसका प्रमाण इन ग्रन्थों में देखने को मिलता है। सूरसागर, सूरसारावली तथा साहित्य लहरी का मूलाधार कृष्ण ही हैं। निःसन्देह सूर की इस कृष्णप्रियता के कई कारण थे। वस्तुतः सर्वप्रथम, सूरदास कृष्ण–भक्तिशाखा के सर्वोत्तम कवि थे और वैयक्तिक रुप से भी वे कृष्ण के अटल भक्त थे। सूरदास आध्यात्मिक दृष्टि से वे वल्लभ–सम्प्रदाय और पुष्टिमार्गीय भक्ति के समर्थक ही नहीं बल्कि निकट सम्पर्क में भी थे जहाँ कि कृष्ण को परब्रह्म मानकर उसकी (कृपा) की आकांक्षा सर्वोपरि मानी जाती थी। सूरदास श्रीनाथ–मन्दिर के कीर्तनकार और अष्टछापी अष्टसखाओं में से एक थे जिनका कार्य कृष्ण समंधित पद बनाकर कृष्ण–चरित्र का चित्रण करना और गायन करता था। सूरकाव्य का एकमात्र और सर्वाधिक प्रेरक स्रोत है–श्रीमद्भागवत, जिसमें कृष्ण की ही जीवन चरित्र की गाथा है। अतः 'सगुन लीला पद गावे' के उद्देश्य से काव्य–सृजन करने वाले सूर सगुण का साकार कृष्ण को मानते थे। सूरदासप्रत्येक तरह से उस ब्रज प्रदेश से सम्बन्धित थे जहाँ का एक–एक कण कृष्ण और उनके क्रिया–कलापों का साकार क्रीड़स्थल है। सूर ने जयदेव, चंडीदास एवं विद्यापति प्रभृति आदि कवियों से प्रभाव ग्रहण किये, वह सभी पहले ही कृष्ण–चरित्र का गायन कर चुके थे इसलिए सूरदास भी इसी परम्परा को विकसित करने वाले थे। सूरदास के समय कृष्णाराधना का प्रचार–प्रसार बहुत जोरों पर था इसलिए स्वयं सूर इससे प्रभावित होने के कारण अछूते नहीं रह सकते थे।

मुख्य शब्द : सूरदास काव्य कृष्ण–चरित्र, कौतूहल प्रसंग

प्रस्तावना

शास्त्रीय दृष्टि से देखा जाए तो कृष्ण–कृष्ण–कया के नायक थे और इस कारण भी सूरदास का अपने नायक–चरित्र पर अधिकाधिक ध्यान देना आवश्यक ही नहीं, स्वाभाविक भी था। यहाँ पर देखने योग्य बात यह भी है कि ''वे परम्परा को नये मानवीय सन्दर्भों से जोड़ना चाहते थे। भागवत से कथानक उन्होंने लिया अवश्य, किन्तु उनका कृतित्व कृष्ण–चरित्र को अनूदित करने में नहीं अपितु नूतन सन्दर्भों की उद्भावना कर उसे नयी परिस्थितियों के अनुकूल बनाने में है।''1 इसी कारण से सूरदास का कृष्ण–चरित्र अनेक तरह केस्वरुपों में प्रदर्शित हुआ है। अतः सूरदास के काव्य में कृष्ण चरित्र की अदभूत महिमा का चित्रण देखने को मिलता है।

सूरदास काव्य में कृष्ण से सम्बन्धित कई रचनायें बतायी जाती हैं तथा 'गोवर्धन लीला या सरस लीला', 'भ्रमरगीत', 'नागलीला', 'मान–लीला', 'दान–लीला', 'राधा–रस–केलि–कौतूहल' आदि परन्तु सूरदास की प्रामाणिक रचनायें तीन हैं–'सूरसागर', 'सूरसारावली' तथा 'साहित्य लहरी'। इनमें से अन्तिम 'साहित्य–लहरी' अनेक दृष्टिकूट पदों और काव्यशास्त्रीय लक्षणों का ग्रन्थ माना जाता है जबकि 'सूरसारावली' में होली–रुपक के माध्यम से रासलीला आदि अनेक कथायें कही गयी हैं। 'सूरसागर' कृष्ण की जीवनगाथा चित्रितकर है।यहाँ पर कहना न होगा कि इन सभी रचनाओं के सर्वप्रधान नायक कृष्ण ही हैं और इनमें उन्हीं का चरितगायन विस्तार–पूर्वक देखने को मिलता है। यथा ''निर्विवाद रुप से सूर सागर लोक जीवन का वृहद कोश है।''2

सूरदास केकाव्य में चित्रित कृष्ण कथा और कृष्ण–चरित्र में कृष्ण मुख्यतः चार रुपों में देखने को मिलते हैं :–बालक कृष्ण, रसिक, राधा, (गोपी) बल्लभ,लोकनायक

कृष्ण का बालक स्वरुप यह रुप सर्वाधिक मात्रा में देखने को मिलता है–'सूरसागर' में जहाँ कंस–कारागार में हुए कृष्ण–जन्म से इसका शुभारम्भ होता है। यशोदा सान्निधय से इसको इतना विस्तार मिलता है कि ''बालक की कोई चेष्टा और उसका कोई भी रुप ऐसा नहीं, जिसे सूर ने अपनी लेखनी से न संवारा हो।''3 इसमें संयोग और वियोग दोनों में ही बालक कृष्ण न जाने कितने रुपों में मुखरित हुए हैं। यहाँ बालक कृष्ण के नाना अन्तर्दशायें, मनोवृत्तियाँ और मनोभाव अंकित हुए हैं बालक कृष्ण का सौन्दर्य, बाल–सुलभ चपलता, क्रीड़ायें, तोतली–अटपटी वाणी, स्पर्धा, वाद–विवाद, शरारतें, आत्मगौरव, हठधर्मिता, शिकायतें, खीझ, बाल–सुलभ क्रिया–कलाप आदि से लेकर गोचारण और दधिलीला तक बालक कृष्ण का बालरुप मुखर किया गया है। एकदम स्वाभाविक और रसमय स्वरुप में कृष्ण कला में देखने को मिलते हैं। इसी भाँति बालक कृष्ण के मथुरा–प्रवास और उनके सम्बन्धी नाना विघ्न बाधाओं, संकटों आदि की सम्भावना मातृ पर आधृत वियोगावस्था के नाना चरित्र चित्रण भी यहाँ देखने को मिलते हैं। इन सभी प्रसंगों में, भागवत के पारब्रह्मावतार बालक कृष्ण एकदम जन–सामान्य वर्ग के बालक के स्वरुप में चित्रित हो रहे हैं। यहाँ लोक जीवन की सुन्दर प्रस्तुति सूरदास ने कृष्ण चरित्र के बाल रुप में की है।

बालक कृष्ण की किशोरावस्था से ही उनका रसिक रुप मुखरित होने लगता है। गोदोहन, गोचारण, चीरहरण, पनघट–लीला, दानलीला, मुरली–माधुर तथा रासादि अनेक प्रसंग इसी के प्रमाण हैं। ऐसे प्रसंगों में नटवार नागर मुरलीवादक, नृतक, कुशल नायक और लीलाधारी बालक कृष्ण के नाना रसिकसूचक गुण मुखर स्वरुप को चित्रित कर रहे हैं। बालक कृष्ण की मधुर मुस्कान हो या दुपट्टा ओढ़कर गोपियों एवं राधाको फंसाना, मार्ग की छेड़छाड़ हो या दधि–गो के बहाने प्रणय–निवेदन करना, नायकोचित बाह्य सौन्दर्य हो अथवा आन्तरिक गुणों को पुरुषोचित गुणों का उद्घाटन और आध्यात्मिक होने पर भी एकदम सांसारिक एवं तत्कालीन ग्राम्य समाज के सहज–सरल रुप में दिखलाई पड़ता है। यहाँ तक कि 'भ्रमरगीत' जैसे विरह–प्रसंगों में भी गोपियाँ बालक कृष्ण के इसी रुप को स्थान–स्थान पर उद्धृत करती हैं। 'साहित्य लहरी' में बालक कृष्ण का यही स्वरुप यदि काव्यशास्त्रीय आधार पर मुखरित हुआ है तब 'सूरसारावली' में आध्यात्मिक धरातल पर यह रुप देखने को मिलता है। एकदम भौतिक धरातल और कवियुगीन परिस्थितियों से प्रभावित–स्वरुप कृष्ण चरित्र का दिखलाई पड़ता है सूरकाव्य में जिसमें लोक जीवन की झाँकी स्पष्ट रुप से दिखलाई पड़ती है।

किशोर बालक कृष्ण का राधा या गोपी–सम्पर्क शीघ्र ही, युवावस्था तक आते–आते, बालक कृष्ण को राधा गोपी बल्लभ बना देता है। इसलिए वह गोपिकायें तो परकीया हैं ही, राधा भी काफी समय तक परकीया ही रहती है। यद्यपि 'सूरसागर' में राधा (गोपी)–कृष्ण परिचय का भी स्पष्ट उल्लेख हुआ है जो राधा गोपी की स्वकीया बनाता है। बालक कृष्ण को राधा गोपी बल्लभ और आध्यात्मिक दृष्टि से तो यही 'राधा बल्लभीय सम्प्रदाय की आधार–भूमि है। राधा गोपी–कृष्ण–मिलन, नाना लीलायें, मिलन–विनोद, दाम्पत्य जीवन, मानादि, वियोग आदि विविध प्रसंग इसी के प्रमाण हैं। इन सबका पर्य्यवसान द्वारिका में राधा–माधव भेंट पर स्पष्ट रुप से देखने को मिलता है।

सूरदास के कृष्ण ब्रह्मावतार हैं जिनका अवतरण भू–भार हटाने और कंसादि का संहार करने हेतु हुआ है। वत्सासुर, अधासुर, पूतना–वध, गोवर्धन धारण, तृणवृत्त से लेकर कंस–वध तक के नाना कार्य बालक कृष्ण के इसी लोक–नायकत्व के स्वरुप को प्रकट करते हैं। अपने इस रुप में कृष्ण शक्तिशाली योद्धा, अजेय नायक, उच्च कोटि के राजनीतिज्ञ, महान् कर्तव्यपरायण और देश–जाति–उद्धारकआदि न जाने कितने गुणों से सुशोभित हो रहे हैं। मुख्यतः यहाँ पर कृष्ण 'अत्रयी' (अभाव, अन्याय और अत्याचार) के विरोधी, योद्धा तथा दीनबन्धु हैं। अभाव वैयक्तिक पूतना–वध हो अथवा सामाजिक बकासुर, वत्सासुर, कागासुर, अघासुर, धेनुकासुरादि का वध कालियादमन, गोवर्धन–धारण कृष्ण दोनों का विरोध ही नहीं करते हैं बल्कि यथाशक्ति उनकी समाप्ति भी करते हैं। इसी तरह से अत्याचारी, अन्यायी कंस का वध, यमलार्जुन,–उद्धार आदि उनके अत्याचार–अन्याय–विरोधी होने के सूचक हैं। इन सभी प्रसंगों में कृष्ण का योद्धा स्वरुप भी मुखरित हुआ है जिसका श्रीगणेश 'मथुरा–प्रवास–प्रसंग' से ही होता है, यद्यपि बाल लीलादि में भी यह कृष्ण कास्वरुप प्रस्फुटित हो चुका है।

जरासन्ध–वध, द्वारिका में नंद–राज्य की स्थापना, रुकमणि विवाह, कालयवन–वध, शिशुपाल–वध, आदि भी इसी तरह के ही कुछ प्रसंग हैं। बालक कृष्ण के दीनबन्धु–रुप का देखें तो कुब्जा कंस की दासी तथा सुदामा बालक कृष्ण का बाल सखा विषयक प्रसंग इसी के प्रमाण देखने को मिलते हैं। सूरदास के विनय पदों के कृष्ण के इसी स्वरुप का विरुदगायन एक श्रेष्ठ भक्त की भाँति करते ही हैं जिनकी मधुरता बनी हुई है जिसकी मधुरता सम्पूर्ण काव्य में देखने को मिलती है

बालक कृष्ण–चरित्र निःसन्देह नाना पुराणों, पूर्ववर्ती बालक कृष्ण–साहित्य तथा मुख्यतः श्रीमद्भागवत आदि से प्रभावित–परिचालित है। फिर भी ''उनका कृतित्व बालक कृष्ण चरित्र को अनुदित करने में नहीं अपितु नूतन सन्दर्भों की उद्भावना कर उसे नयी परिस्थितियों के अनुकूल बनाने में है।''4 बाल कृष्ण–चरित्र को इतने विशाल जीवन को विविध सनातन भाव–भूमियों पर और इतने अधिक व्यापक–सरस रुप में अन्य कोई भी कवि चित्रित नहीं कर पाया है। यहाँ तो सूर के बालक कृष्ण ही हैं जिनमें पुराणों का अवतारत्व, श्रृंगार–काव्य, का रसिकत्व, भागवत् का अध्यात्म, महाभारतादि का योद्धा और राजनीति विशारदत्व भी है। इससे भी अधिक बालक कृष्ण का सामान्य ग्राम्य रुप, आलंवार भक्तों का बालरुप, जयदेव, चंडीदास और विद्यापति आदि का नायकत्व तथा श्रृंगारिक रसिक रुप तथा साम्प्रदायिकता से परे आध्यात्मिक–दार्शनिक रुप एक समन्वित है। ''सूर ने बालक कृष्ण–चरित्र को एक नया मोड़ देकर, मानव के अति निकट लाकर, उसे हर व्यक्ति के मानस को छूपे वाला बना दिया है। सूर–भक्ति की इस शाखा ने हिन्दी साहित्य को एक नयी दृष्टि और नया चिन्तन दिया है।''5 सूरदास की भक्ति परम्परा के आराध्य देव में कृष्ण सर्वत्र स्वरुप में दिखलाई पड़ते हैं। इसलिए सूरदास बिना कृष्ण के एक पग–एक पग बढ़ाना बड़ी मुश्किल दिखलाई पड़ता है। अतः कृष्ण की सम्पूर्ण लीलाओं को अपने काव्य में सूरदास निरन्तर निहारते रहते हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :

- प्रो0 सत्यनारायण त्रिपाठी–सूरसाहित्यिक की उपलब्धि नियम, पृ0 111
- डॉ. हरवंश लाल शर्मा–सूरदास और साहित्य, पृ0 12
- शशि तिवारी–सूर के कृष्ण : एक अनुशीलन पृ0 42
- प्रो0 सत्यनारायण त्रिपाठी–सूर की साहिक साधना पृ0 395
- शशि तिवारी–सूर के कृष्ण : एक अनुशीलन पृ0 184